

सरल संस्कृत शिक्षक

भाग २

(हिन्दी)

भारतीय विद्या भवन द्वारा संचालित

(सरल संस्कृत परीक्षा विभाग)

संपादक

जयन्तकृष्ण ह. दवे, मा. नियामक, भा. वि. भ.

महेशचन्द्र शास्त्री, विद्याभास्कर, परीक्षामन्त्री

मूल्य ५० पैसे

(दशम संस्करण)

भारतीय विद्या भवन, कुलपति क. मा. मुन्शी मार्ग

बम्बई—७

दो शब्द

आज से पाँच वर्ष पूर्व इतिहासप्रसिद्ध सोमनाथ मंदिर की पुनः प्रतिष्ठापना का समारम्भ हुआ था, जो भारत के लिए एक विशेष गौरव की घटना थी ।

स्वर्गीय सरदार पटेल की एक महान् कल्पना उस दिन साकार हुई थी । राष्ट्र के श्रद्धाभाजन स्व. राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसादजी ने इस समारंभ में प्रमुख पद ग्रहण किया था । माननीय श्री कन्हैयालाल मुन्शी इस अनुष्ठान के प्रमुख सूत्रधार थे तथा समादरणीय श्री ढेबरजी उसके स्वागताध्यक्ष थे । राष्ट्र की इन विभूतियों ने मिलकर भारतीय इतिहास में उस दिन एक स्वर्णिम अध्याय जोडा था ।

इसी पावन अवसर पर वहाँ 'संस्कृत विश्व परिषद्' की स्थापना हुई । परिषद् के चतुर्थ अधिवेशन में यह निश्चय हुआ कि संस्कृत की सरल परीक्षाएँ आरम्भ की जायें । तदनुसार एक पाठ्यक्रम समिति निर्धारित की गई, जिसके सदस्य इस प्रकार निर्वाचित हुए :–

१. **श्रीयुत ज. ह. दवे,** प्रधानमन्त्री, सं. वि. परिषद्

२. **प्रा. ह. दा. वेलणकरजी**

३. **डॉ. ए. डी. पुसाळकरजी**

४. **आचार्य दीक्षितारजी**

५. **प्रा. अनन्तशास्त्री फडकेजी**

६. **श्री महेशचन्द्र शास्त्री,** परीक्षामन्त्री

समिति के सदस्यों ने मिलकर जो पाठ्यक्रम निर्धारित किया तदनुसार ये पुस्तकें प्रकाशित की जा रही हैं ।

हमें आशा है कि ये पाठ्यपुस्तकें खूब लोकप्रिय होंगी तथा इन्हीं पाठ्यपुस्तकों की सहायता से 'संस्कृत विश्व परिषद्' के लिए 'भारतीय विद्या भवन' द्वारा संचालित परीक्षाओं का भी अधिकाधिक प्रचार होगा ।

पाठ्यक्रम समिति के सदस्यों का हम आभार मानते हैं, जिन्होंने अपना अमूल्य सहयोग इस कार्य में दिया ।

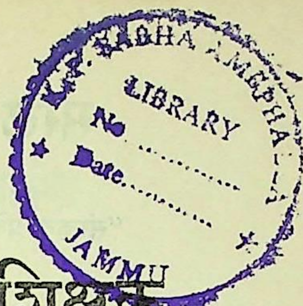
जयन्तकृष्ण हरिकृष्ण दवे

प्रधानमन्त्री, सं. वि. प.

२६–५–५६

तथा मानार्ह नियामक, भा. वि. भ.





सरल संस्कृत शिक्षक

भाग २

(हिन्दी)

भारतीय विद्या भवन द्वारा संचालित

(सरल संस्कृत परीक्षा विभाग)

संपादक

जयन्तकृष्ण ह. दवे, मा. नियामक, भा. वि. भ.

महेशचन्द्र शास्त्री, विद्याभास्कर, परीक्षामन्त्री

मूल्य ५० पैसे

(दशम संस्करण)

भारतीय विद्या भवन, कुलपति क. मा. मुन्शी मार्ग

बम्बई–७

सरल संस्कृत शिक्षक

[भाग २]

"संस्कृत प्रवेश" परीक्षा के लिए निर्धारित

प्रास्ताविक दो शब्द

'सरल संस्कृत शिक्षक' का यह द्वितीय भाग 'संस्कृत प्रवेश' परीक्षा के प्रथम प्रश्नपत्र के लिए निर्धारित किया गया है।

नवीन भाग आरम्भ करने से पूर्व प्रथम भाग को पक्का कर लेना बहुत उपयोगी है।

प्रथम भाग में अकारान्त पुंल्लिग, नपुंसकलिंग तथा आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप दिये गये हैं।

साथ ही युष्मत्, अस्मत्, तत्, यत्, किम् (पुंल्लिग) के रूप भी दिये गये हैं। इन सबको भलीभाँति कण्ठस्थ कर लेना चाहिए।

क्रियापदों के वर्तमानकाल तथा भविष्यकाल के जो रूप दिये गये हैं, तथा त्वान्त, ल्यबन्त के जो रूप दिये गये हैं, उन्हें भली प्रकार कण्ठस्थ कर लेना चाहिए।

सन्धियों पर भी विशेष ध्यान रखना आवश्यक है।

इस पाठ में इकारान्त, उकारान्त शब्दों के तीनों लिङ्गों के रूप दिये गये हैं।

तत्, यत्, किम् के स्त्रीलिङ्ग के रूप दिये गये हैं। यण् विसर्गलोप, अय्, अव्, आय्, आव् आदि सन्धियों को दिया गया है।

प्रथम भूतकाल के प्रयोग दिये गये हैं।

व्याकरणसम्बन्धी इन बातों के अतिरिक्त जो नये शब्द एवं क्रियापद दिये गये हैं, उन्हें भली प्रकार कण्ठस्थ कर लेना चाहिए।

वाक्यरचना, अनुवाद आदि की ओर विशेष ध्यान देना आवश्यक है।

सुभाषितों को कण्ठस्थ करना चाहिए तथा उनका अन्वय और अर्थ भी जानना चाहिए। इसी प्रकार लोकोक्तियाँ भी कण्ठस्थ करनी चाहिए।

पुनः पुनः वाचन से भाषा परिमार्जित होती चली जायेगी।

इस प्रकार इस भाग का अध्ययन किया जाय।

卐

सरल संस्कृत शिक्षक
(भाग २)

पाठ १

इकारान्त पुंल्लिग 'कवि' शब्द

एकवचन	बहुवचन	
कविः=कवि	कवयः=(अनेक) कवि	प्रथमा
कविम्=कवि को	कवीन्=कवियों को	द्वितीया
कविना=कवि ने, से, के द्वारा	कविभिः=कवियों से	तृतीया
कवये=कवि के लिए	कविभ्यः=कवियों के लिए	चतुर्थी
कवेः=कवि से	कविभ्यः=कवियों से	पञ्चमी
कवेः=कवि का, के, की	कवीनाम्=कवियों का, के, की	षष्ठी
कवौ=कवि में, पे, पर	कविषु=कवियों में, पे, पर	सप्तमी

शब्दाः

१. हरिः = हरि
२. कपिः = वानर
३. रविः = सूर्य
४. अरिः = शत्रु
५. ऋषिः = ऋषि
६. नृपतिः = भूपति, राजा
७. सारथिः = सारथी
८. अतिथिः = अतिथि
९. यतिः = संन्यासी
१०. कलिः = कलियुग

निम्नांकित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

१. कविः सूर्यास्तसमयस्य सौन्दर्यं दृष्ट्वा काव्यं करोति। २. कवयः सूर्योदस्य सुन्दरं वर्णनं कुर्वन्ति। ३. अहमपि काव्यं कर्तुमिच्छामि। ४. कवीन् दृष्ट्वा मम हृदये आनन्दः भवति। ५. कविना कालिदासेन रघुवंशं नाम महाकाव्यं विरचितम्। ६. वाणभट्टादिभिः कविभिः संस्कृतभाषायामनेके ग्रन्थाः रचिताः। ७. रामः कवये फलानि पुष्पाणि च आनयति। ८. कविष कः श्रेष्ठः कविः? ९. कवीनां गणना श्रेष्ठपुरुषेषु भवति। १०. हरिः सर्वान् पालयति। ११. रवेः प्रकाशः जनान् आह्लादयति। १२. तस्य नृपतेः राज्यं सुविशालं अस्ति। १३. तत्र अरयः न सन्ति। १४. ऋषयः आश्रमेषु निवसन्ति। १५. कलौ युगे जनाः देवं नार्चयन्ति। १६. यतयः उपदेशं कुर्वन्ति। १७. अतिथयः गृहं गत्वा भोजनं करिष्यन्ति। १८. नृपतौ जनाः विश्वासं कुर्वन्ति। १९. सारथिः रथं आनयति। २०. ऋषीणां आश्रमाः वनानि भूषयन्ति।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

१. मेघदूत नाम का काव्य कालिदास ने बनाया है। २. यति कहाँ रहते हैं? ३. वह राजा बलवान है। ४. सारथी राजा का रथ चलाता है। ५. सूर्य के प्रकाश में पढ़ता हूँ। ६. ऋषियों के आश्रम में बच्चे पढते हैं। ७. हमारे घरों में अतिथि की पूजा की जाती है। ८. हरि के नामस्मरण से

पाप दूर होता है। ९. शत्रुओं के साथ लडाई में राजा की जीत होती है। १०. कलियुग में धर्मविरुद्ध आचरण होता है। ११. क्या तू कवि के काव्य को पढता है? १२. मैं तो अवश्य पढूँगा। १३. और कौन पढेंगे? १४. राजा की सभा में ऋषि प्रवचन करते हैं। १५. ऋषि को सभासद प्रणाम करते हैं। १६. दुर्जन ऋषि की निन्दा करते हैं। १७. अतिथि की पूजा वह क्यों नहीं करता? १८. सूर्योदय के समय ब्राह्मण सन्ध्यावन्दन करते हैं। १९. तू शाम को सन्ध्यावन्दन क्यों नहीं करता? २०. मैं प्रतिदिन अवश्य करता हूँ।

क्रियापदानि

१. **जप्** (जपति) जप करता है।
२. **चर्** (चरति) चलता है।
३. **रक्ष्** (रक्षति) रक्षा करता है।
४. **हस्** (हसति) हँसता है।
५. **वम्** (वमति) वमन करता है।
६. **नम्** (नमति) नमस्कार करता है।
७. **दह्** (दहति) जलता है।
८. **तप्** (तपति) तपता है।
९. **वस्** (वसति) रहता है।
१०. **वाञ्छ्** (वाञ्छति) इच्छा करता है।
११. **शंस्** (शंसति) कहता है।
१२. **त्यज्** (त्यजति) छोडता है।
१३. **जल्प्** (जल्पति) बड-बडाता है, बकवाद करता है।
१४. **निन्द्** (निन्दति) निन्दा करता है।
१५. **क्षिप्** (क्षिपति) फेंकता है।

रिक्त स्थानों में योग्य क्रियापदों की पूर्ति कीजिए:—

१. यतयः ईश्वरं.....। २. वयं परमेश्वरं.....। ३. पर्वते काष्ठानि तृणानि च.....। ४. बालकः मोदकं.....। ५. बालिका गृहे.......। ६. वनेचराः वनेषु ....। ७. नृपतिः राज्यं.....। ८. सः मूर्खः पुरुषः व्यर्थं.....। ९. सज्जनाः न ....। १०. सः न स्वस्थः अतः.......। ११. तेन कटु औषधं पीतं; अतः सः.....। १२. लक्ष्मणः अरिषु बाणान्.....। १३. त्वं कुत्रास्मिन् नगरे.....? १४. जनाः असत्यवादिनं .....। १५. सः कठोरं तपः.....। १६. त्वं आनन्देन कथं..... ? १७. माता एकां वार्तां.... शंसति। १८. किं सः भोजनं.....। १९. अहं दुर्गुणान्....। २०. पिता पुत्रं.....।

निम्नांकित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए:—

सारथिना। रविम्। ऋषये। त्यजथ। जल्पामि। हसन्ति। निन्दन्ति। यतीनाम्। अतिथये।



पाठ २

तत् (वह) शब्द के स्त्रीलिंग के रूप

एकवचन	बहुवचन	
सा = वह	**ताः** = वे	प्रथमा
ताम् = उसको	**ताः** = उनको	द्वितीया
तया = उसने	**ताभिः** = उनसे	तृतीया
तस्यै = उसके लिए	**ताभ्यः** = उनके लिए	चतुर्थी
तस्याः = उससे	**ताभ्यः** = उनसे	पंचमी
तस्याः = उसका	**तासाम्** = उनका	षष्ठी
तस्याम् = उसमें	**तासु** = उनमें	सप्तमी

तत् शब्द के नपुंसकलिंग के रूप

तत्	तानि	प्रथमा
तत्	तानि	द्वितीया

शेष विभक्तियों के रूप पुल्लिग क समान ही चलगे ।

'यत्' एतद्, शब्दों के रूप (स्त्रीलिंग तथा नपुंसकलिंग में) 'तत्' शब्द के रूपों के समान ही चलेंगे, किन्तु 'किम्' का स्त्रीलिंग में 'का' होता है ।

प्रभातम्

स्वस्थः पुरुषः प्रातःकाले शीघ्रं प्रबुध्यते । दिनेशः तु प्रतिदिनं पंचवादनसमये प्रबुध्यते । आयुर्वेदशास्त्रे अपि उक्तं यत्

'ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत स्वस्थो रक्षार्थमायुषः'। शौचमुखमार्जनादिकं कृत्वा सः भ्रमणार्थं गच्छति। यदा सः भ्रमणार्थं गच्छति सा वेला 'अमृतवेला' कथ्यते। अमृतवेलायां भ्रमणं कर्तव्यम्। भ्रमणं कृत्वा अंगेषु तैलमर्दनं कर्तव्यम्। वालानां वृद्धानां च कृते तैल-मर्दनमतीव लाभदायकमस्ति। शास्त्रेषु तैलमर्दनार्थे 'अभ्यङ्ग' शब्दस्य प्रयोगः भवति। 'अभ्यङ्गमाचरेत् नित्यम्' इति तत्र कथितम्। अभ्यङ्गं कृत्वा स्नानमाचरेत्। स्नानेन सर्वं शरीरं स्वच्छं भवति। शीतेन जलेनैव स्नानं कर्तव्यम्। ये वृद्धाः रुग्णाः च सन्ति तैः उष्णेन जलेन स्नातव्यम्। जनाः स्नानसमये स्वफेनस्योपयोगं कुर्वन्ति। परं स्वफेनस्योपयोगः न लाभाय। प्रोञ्छेनैव शरीरं स्वच्छं करणीयम्। स्नात्वा सूर्यनमस्कारं कुर्यात्। श्रेष्ठः व्यायामः सूर्यनमस्कारः। सूर्यनमस्कारेण शरीरे वलं वर्धते सौख्यं स्वास्थ्यं चोपपद्यते। इत्थं व्यायामं विधाय सन्ध्यावन्दनादिकं कुर्यात्। एषः प्रातःक्रमः सर्वेषां कृते हितायास्ति।

शब्दाः

१. **अभ्यंगम्**=तेल की मालिश

२. **स्वफेनम्**=साबुन्

३. **प्रोञ्छः**=अंगोछा

४. **दन्तधावनम्**=दाँतौन

५. **मौद्गर तैलम्**=मोगरे का तेल

६. **पाटल तैलम्**=गुलाब का तेल

संस्कृत भाषा में अनुवाद कीजिए :–

तू कहाँ रहता है? क्या ऋषि वन म रहते हैं? मैं भी वन में जाऊँगा। वहाँ ऋषियों के दर्शन करूँगा। ऋषि

सत्य और धर्म की रक्षा करते हैं। वे धर्म को नहीं छोडते। धर्म का त्याग कौन करते हैं? दुर्जन धर्म को छोडते है। वे दूसरों की निन्दा करते हैं। हम किसीकी निन्दा नहीं करते। हम कुछ नहीं चाहते। तू क्या चाहता है? वह कुछ नहीं चाहता। मूर्ख बडबडाता है। पंडित नहीं बडबडाता। वह कहाँ जाती है? उस बालिका को राजा लड्डू खिलाता है। उन लडकियों में कौन चतुर है? उनका घर कहाँ है? उसमें दुर्गुण नहीं है।

श्लोक

उद्यमेन हि सिध्यन्ति, कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य, प्रविशन्ति मुखे मृगाः।।

अन्वयः—मनोरथैः कार्याणि न सिध्यन्ति, उद्यमन हि (कार्याणि) सिध्यन्ति। सुप्तस्य सिंहस्य मुखे मृगाः (स्वयं) न हि प्रविशन्ति।

अर्थ—मनोरथों से कार्य सफल नहीं होते, वे तो प्रयत्नें से ही सफल हुआ करते हैं। सोये हुए सिंह के मुख में मृग (स्वयमेव) नहीं प्रविष्ट हो जाते।

भावार्थ—जो मनुष्य अपनी इच्छाओं को पूर्ण करना चाहता है वह परिश्रम करे, क्योंकि केवल मनोरथों से कार्य पूरे नहीं होते। उसके लिए तो परिश्रम करना ही चाहिए। सोते हुए शेर के मुँह में हिरन स्वयं नहीं चला जाता। उसे तो परिश्रम से ही प्राप्त किया जाता है।

उद्यमः साहसं धैर्यं, बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः ।
षडेते यत्र वर्तन्ते, तत्र दैवं सहायकृत् ॥

अन्वयः–उद्यमः, साहसं, धैर्यं, बुद्धिः, शक्तिः, पराक्रमः एते षट् यत्र वर्तन्ते तत्र दैवं सहायकृत् भवति ।

अर्थ–प्रयत्न, हिम्मत, धीरज, बुद्धि, शक्ति और पराक्रम ये छः जहाँ रहते हैं, वहाँ भाग्य भी सहायता करता है।

भावार्थ–भाग्य उसीकी सहायता करता है, जिसमें प्रयत्न, हिम्मत, धीरज, बुद्धि, शक्ति और पराक्रम हुआ करते हैं। इन छः के बिना भाग्य भी साथ नहीं देता ।

अलसस्य कुतो विद्या, अविद्यस्य कुतो धनम् ।
अधनस्य कुतो मित्रं, अमित्रस्य कुतः सुखम् ॥

अन्वयः–अलसस्य विद्या कुतः, अविद्यस्य धनं कुतः, अधनस्य मित्रं कुतः, अमित्रस्य सुखं कुतः ?

अर्थ–आलसी को विद्या कहाँ से आयेगी, मूर्ख को धन कहाँ से प्राप्त होगा, निर्धन के मित्र कैसे होंगे और जिसके मित्र नहीं, उसे सुख कहाँ से मिलेगा ?

भावार्थ–आलसी मनुष्य विद्या नहीं पढ़ सकता, जो अविद्वान् होगा, उसे धन नहीं मिलेगा। जिसके पास धन नहीं होता, उसके मित्र नहीं बनते और जब मित्र न होंगे तो सुख नहीं मिलेगा ।



पाठ ३

शब्दाः

१. मतिः (स्त्री.) = बुद्धि
२. रुचिः (,,) = स्वाद, चाह
३. कीर्तिः (,,) = यश
४. बुद्धिः (,,) = बुद्धि
५. शान्तिः (,,) = शान्ति, चैन
६. मुक्तिः (,,) = मुक्ति
७. ग्रन्थिः (पुं.) = गाँठ
८. हरिः (,,) = शेर, सिंह
९. अब्धिः (,,) = समुद्र
१०. आजिः (स्त्री.) = युद्ध
११. कृमिः (पुं.) = कीडा
१२. विधिः (पुं.) = विधाता, ब्रह्मा, दैव
१३. इषुधिः (,,) = तरकश, बाणों का तूणीर
१४. दुन्दुभिः (पुं.स्त्री.) = ढोल
१५. राशिः (पुं.) = ढेर
१६. अद्रिः (,,) = पर्वत
१७. उदधिः (,,) = समुद्र
१८. रश्मिः (,,) = किरण
१९. मरीचिः (पुं.स्त्री) = किरण
२०. आधिः (पुं.) = दुःख (मानसिक)

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग 'मति' शब्द के रूप

मतिः	मतयः	प्रथमा
मतिम्	मतीः	द्वितीया
मत्या	मतिभिः	तृतीया

मत्यै, मतये	मतिभ्यः	चतुर्थी
मत्याः, मतेः	मतिभ्यः	पञ्चमी
मत्याः, मतेः	मतीनाम्	षष्ठी
मत्याम्, मतौ	मतिषु	सप्तमी
मते	मतयः	सम्बोधनम्

विशेष—इकारान्त पुल्लिग तथा इकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूपों में द्वितीया के वहुवचन और तृतीया के एकवचन में अन्तर है। चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी तथा सप्तमी के एकवचन में स्त्रीलिंग में दो-दो रूप वनते हैं (एक पुल्लिग शब्दों के समान तथा दूसरा इकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के समान)।

हिन्दी में अनुवाद कीजिए :–

१. अधर्मे मम मतिः न भवति। २. भक्तस्य रुचिः देवपूजायां भवति। ३. कीर्तये नृपाः यत्नं कुर्वन्ति। ४. विमला बुद्धिः सद्विचारं प्रकाशयति। ५. सदाचारेण नरः शान्तिं प्राप्नोति। ६. पश्चात्तापेन पापात् मुक्तिः भवति। ७. सूत्रे ग्रन्थिः नास्ति। ८. धान्यस्य राशीन् पश्यामि। ९. हिमालयः हिमानां अद्रिः। १०. उदधेः जलं क्षारम्। ११. कपेः लीलया वालाः रमन्ते। १२. देवैः अब्धेः चतुर्दश रत्नानि प्राप्तानि। १३. कृमिभिः जायते व्याधिः। १४. विधिना यत् लिखितं तदसत्यं न भवति। १५. रामः इषुधौ वाणं स्थापयति। १६. दुन्दुभिः तु सुतरां अचेतना। १७. सूर्यस्य रश्मिभिः अन्धकारः नश्यति। १८. रविः

मरीचिभिः घनान् चित्रितान् करोति। १९. आजौ पराजिताः शत्रवः निन्दिताः भवन्ति। २०. आरोग्य-सम्पन्नः नरः आधिभिः पीडां न प्राप्नोति।

क्रियापदानि (आत्मनेपदी)

यत्=प्रयत्न करना

एकवचन	**बहुवचन**	
यतते	यतन्ते	प्रथम पुरुष
यतसे	यतध्वे	मध्यम पुरुष
यते	यतामहे	उत्तम पुरुष

लभ्=लाभ होना, प्राप्त होना

लभते	लभन्ते	प्रथम पुरुष
लभसे	लभध्वे	मध्यम पुरुष
लभे	लभामहे	उत्तम पुरुष

रम्=खेलना

रमते	रमन्ते	प्रथम पुरुष
रमसे	रमध्वे	मध्यम पुरुष
रमे	रमामहे	उत्तम पुरुष

क्षम्=क्षमा करना

क्षमते	क्षमन्ते	प्रथम पुरुष
क्षमसे	क्षमध्वे	मध्यम पुरुष
क्षमे	क्षमामहे	उत्तम पुरुष

त्रप्=लज्जा करना

त्रपते	**त्रपन्ते**	प्रथम पुरुष
त्रपसे	**त्रपध्वे**	मध्यम पुरुष
त्रपे	**त्रपामहे**	उत्तम पुरुष

इसी प्रकार निम्नांकित क्रियापदों के रूप भी होंगे :—

१. **सह्** (सहते) = सहन करना। २. **स्वाद्** (स्वदते) = स्वाद लेना। ३. **बाध्** (बाधते) = रुकावट डालना। ४. **भाष्** (भाषते) = बोलना। ५. **भास्** (भासते) = चमकना।

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए :-

१. सूर्य आकाश में चमकता है। २. वह संस्कृत भाषा में बोलता है। ३. अनिल कष्ट सहन नहीं करता। ४. वह क्यों लज्जित होती है? ५. मैं क्षमा नहीं करता। ६. तुम क्षमा करोगे? ७. वे क्षमा नहीं करेंगे। ८. बच्चे खेलते हैं। ९. हम भी खेलेंगे। १०. हम धन प्राप्त करते हैं।

*

पाठ ४

हिन्दी में अनुवाद कीजिए :–

१. ते यतिष्यन्ते धनप्राप्त्यर्थम् । २. वयमपि यतिष्यामहे कीर्तिलाभाय । ३. कः अन्नार्थं यतिष्यते ? ४. सर्वे जनाः धनं प्राप्तुं यतिष्यन्ते । ५. ये जनाः यज्ञं कुर्वन्ति ते स्वर्गं सुखं वा लप्स्यन्ते । ६. लप्स्यसे त्वम् अवश्यं साफल्यं परीक्षायाम् । ७. कः जनकः सहिष्यते दुर्वर्तनं कदापि पुत्रस्य ? ८. तस्मिन् विषये विवाद-सभायां त्वं किं भाषिष्यसे ? ९. नाहं किमपि भाषिष्ये । १०. किं ते भाषिष्यन्ते ?

भविष्यत्काल के रूप

भाष्=बोलना

भाषिष्यते	**भाषिष्यन्ते**	प्रथम पुरुष
भाषिष्यसे	**भाषिष्यध्वे**	मध्यम पुरुष
भाषिष्ये	**भाषिष्यामहे**	उत्तम पुरुष

इसी प्रकार यत्, वन्द् आदि क्रियापदों के रूप भी चलेंगे ।

शब्दाः

१ **विप्रः**=ब्राह्मण
२ **पान्थः**=बटोहि, राही
३ **अर्भकः**=बालक
४ **रथः**=रथ, गाडी

५ **अर्थः**=पैसा	१५ **पटः**=वस्त्र
६ **अपवर्गः**=मोक्ष	१६ **आणकम्**=आना
७ **वत्सः**=बछडा, बालक	१७ **सूदः**=रसोइया
८ **मूषकः**=चूहा	१८ **भूपः**=राजा
९ **प्रासादः**=महल	१९ **सूचिकः**=दर्जी
१० **लेखकः**=लेखक	२० **रजकः, वरठः**=धोबी
११ **रूप्यकम्**=रुपया	२१ **चर्मकारः**=चमार
१२ **चरणः**=पैर	२२ **कुम्भकारः**=कुम्हार
१३ **चायः**=चाय	२३ **नापितः**=नाई
१४ **मध्यगः, दलालः**=दलाल	२४ **सुवर्णकारः**=सुनार

निम्नांकित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए :–

विप्राः वनं गच्छन्ति। पान्थाः ग्रामान्तरं गच्छन्ति। अर्थप्राप्त्यर्थं सर्वे जनाः यतन्ते। अपवर्गं केवलं पुण्यपुरुषाः लभन्ते। वत्साः तत्र क्रीडन्ति। मूषकः गृहे बिलं करोति। प्रासादे दीपाः भासन्ते। लेखकः पुरस्कारं प्राप्नोति। सः रूप्यकं अन्नं वस्त्रं च क्रीणाति। ऋषीणां चरणेषु प्रणामः कर्तव्यः। छात्रैः चायपानं न कर्तव्यम्। मध्यगाः व्यापारे साहाय्यं कुर्वन्ति। अर्भकः सः न गन्तुं समर्थः। रथः मार्गे वेगेन धावति। पटेन अवगुण्ठिता नारी। आणकेन मोदकं क्रीणामि। सूदः ओदनं पचति। भूपः राज्यं करोति। सूचकः वस्त्राणि सीव्यति। रजकः वस्त्राणि प्रक्षालयति। चर्मकारः

पादत्राणं करोति । कुम्भकारः घटं करोति । नापितः क्षौरकार्यं करोति । सुवर्णकारः आभरणानि करोति ।

संवादः

माधव–भ्रातः ! त्वं कस्यां पाठशालायां पठसि ?

गोविन्द–अहं बालमन्दिरे पठामि ।

माधव–किं तत्र क्रीडांगणमस्ति ?

गोविन्द–आम्, अतीव विस्तृतं क्रीडांगणं तत्र ।

माधव–कः क्रीडासमयः छात्राणाम् ?

गोविन्द–सायंकाले पञ्चवादनसमये छात्राः तत्र क्रीडितुमागच्छन्ति ।

माधव–त्वं कथं क्रीडसि ।

गोविन्द–अहं तत्र कूदनं, धावनं आरोहणम्, अवतरणं इत्यादिकं च करोमि ।

माधव–त्वं कस्मिन् वर्गे पठसि ?

गोविन्द–पञ्चमवर्गे अहं पठामि ।

माधव–वार्षिकी परीक्षा कदा भविष्यति ते?

गोविन्द–ख्रिस्ताब्दस्य तृतीये मासे भविष्यति ।

माधव–कः त्वां संस्कृतं पाठयति ?

गोविन्द–प्रधानाध्यापकः एव मां संस्कृतं पाठयति ।

श्लोकः

सर्पाः पिबन्ति पवनं न च दुर्बलास्ते,
शुष्कैस्तृणैर्वनगजा बलिनो भवन्ति ।
कन्दैः फलैः मुनिवराः क्षपयन्ति कालं,
सन्तोष एव पुरुषस्य परं निधानम् ।।

अन्वय–सर्पाः पवनं पिबन्ति ते च दुर्बलाः न । वनगजाः शुष्कैः तृणैः बलिनः भवन्ति । मुनिवराः कन्दैः फलैः कालं क्षपयन्ति । पुरुषस्य सन्तोषः एव परं निधानम् ।

अर्थ–साँप वायु पीकर रहते हैं, और वे दुर्बल नहीं होते । जंगली हाथी सूखे तिनके खाकर भी शक्तिशाली रहते हैं । मुनिगण कन्दों और फलों पर ही निर्वाह करते हैं । (वास्तव में) मनुष्य की सबसे बडी सम्पत्ति सन्तोष ही है ।

भावार्थ–मनुष्य को जीवन में सन्तोष रखना चाहिए, यही उसकी बडी सम्पत्ति है । मुनि, हाथी और सर्प सन्तोषी होने के कारण ही पूज्य, शक्तिशाली और तेजस्वी हैं ।



पाठ ५

अनद्यतन भूतकाल

गच्छ् = जाना	अगच्छत् = (वह) गया	अगच्छन् = (वे) गये
	अगच्छः = (तू) गया	अगच्छत = (तुम) गये
	अगच्छम् = (मैं) गया	अगच्छाम = (हम) गये
पिब्—पीना	अपिबत् = पिया	अपिबन् = पिया
	अपिबः = पिया	अपिबत = पिया
	अपिबम् = पिया	अपिबाम = पिया
पठ्—पढना	अपठत् = पढा	अपठन् = पढा
	अपठः = पढा	अपठत = पढा
	अपठम् = पढा	अपठाम = पढा
पश्य्—देखना	अपश्यत् = देखा	अपश्यन् = देखा
	अपश्यः = देखा	अपश्यत = देखा
	अपश्यम् = देखा	अपश्याम = देखा
वद्—बोलना	अवदत् = बोला	अवदन् = बोले
	अवदः = बोला	अवदत = बोले
	अवदम् = बोला	अवदाम = बोले

इसी प्रकार अन्य परस्मैपदी धातुओं के रूप भी बनेंगे। पाठक अधिक से अधिक ऐसी धातुओं के रूप चलाकर अभ्यास करें।

१. भूतकाल का चिह्न 'अ' धातु से पूर्व लगता है। यह बात उपर्युक्त रूपों से स्पष्ट होती है।

२. जब धातु के पूर्व उपसर्ग आता है, तब उपसर्ग के बाद 'अ' सहित धातु का भूतकालिक रूप आता है।

जैसे—उप + अगच्छत् = उपागच्छत् = पास गया।
अनु + अमन्यत = अन्वमन्यत = मान गया।

निम्नांकित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए :-

१. विश्वामित्रः अयोध्यामगच्छत्। २. तत्र राजप्रासादे गत्वा सः द्वारपालमवदत् 'दशरथस्य दर्शनं कर्तुमिच्छामि' इति। ३. द्वारपालः अभ्यन्तरे गत्वा राजानमब्रवीत् – 'विश्वामित्रः भवन्तं द्रष्टुमिच्छति।' ४. राजा शीघ्रं तत्रागतः; अपश्यत् च विश्वामित्रम्। ५. राजापृच्छत् 'भगवन्! किं मया कर्तव्यम्?' ६. विश्वामित्रः अब्रवीत् 'अहं रामचन्द्रं यज्ञस्य रक्षणार्थं नेष्यामि आश्रमम्। ७. सः तत्र राक्षसान् हनिष्यति।' ८. एतत् श्रुत्वा दुःखावेगेन राजा भूमौ अपतत्। ९. तदा सर्वे अमात्याः तत्रातिष्ठन्। १०. अमात्यैः सान्त्वितः राजा रामचन्द्रं आश्रमे प्रेषितुमन्वमन्यत।

सः जलमपिबत्। किं त्वं दुग्धं नापिबः? अहं तावत् चायमपिबम्। सः कुत्रागच्छत्? किं त्वमपश्यः? नाहमपश्यम्।

किं ते परस्परं नावदन् ? न हि ते तत्र नावदन्। अन्ये बालका सहसा तत्रापतन्। अहं तु नापतम्।

निम्नांकित क्रियापदों की सहायता से एक-एक वाक्य बनाइए :-

१. अभवत्। २. अपतः। ३. अकथयत्। ४. अलिखन्। ५. अलिखम्। ६. अपश्यन्। ७. अपालयत्। ८. अचलत्। ९. अक्षालयत्। १०. अगच्छन्।

मम गृहम्

वाल ! किं नामधेयं तव ?

गोविन्द, इति नामधेयं मम।

त्वं कुत्र निवससि ?

अहमस्मिन् एव गृहे निवसामि।

तव गृहे अन्ये के के जनाः सन्ति ?

मम गृहे मम भगिनी, भ्राता, माता, पिता च सन्ति।

किं करोति तव भ्राता ?

मम ज्येष्ठः भ्राता कार्पासस्य व्यापार करोति।

अथ ते भगिनी अत्रैवास्ति ?

नहि सा पाठशालां गता। सा तत्राध्यापनकार्यं करोति।

तर्हि त्वमत्रैकाकी एवासि ?

आम्, अहमेकाकी एवात्रास्मि।

तव पिता कुत्रास्ति ?

मम पिता गृहस्य पार्श्वे उद्याने पुस्तकमेकं पठति।

तव माता किं करोति ?

सा भोजनगृहे ओदनं पचति।

कदा त्वं करोषि भोजनम् ?

अहं सार्धैकादशवादने प्रतिदिनं भोजनं करोमि। अद्य तु त्वमपि मया सह भोजनं कुरु।

अस्तु, अद्याहमपि अत्रैव भोजनं करिष्यामि।

मम माता प्रसन्ना भविष्यति यदि त्वमद्यात्रैव भोजनं करिष्यसि।

तव परिवारे अन्ये के सम्वन्धिनः सन्ति ?

विशालः खलु मम परिवारः। पितृव्यः, मातुलः, मातुलानी, मातामही च सन्ति।

भोजनं कृत्वा किं त्वं ताम्बूलं भक्षयसि ?

नैव, नाहं ताम्बूलं भक्षयामि। अहं तु लवङ्गं एलादिकं वा गृह्णामि।

किं भोजनान्ते किञ्चित् विश्रामं न करोषि ?

नाहं विश्रामसुखं अनुभवामि। तस्मिन् पर्यङ्के मे पिता किञ्चित्कालं विश्राम्यति।

अहमपि विश्रामं कर्तुमिच्छामि भोजनानन्तरम्। सुखेन विश्रामः कर्तव्यः परं प्रथमं भोजनं कुरु।

शब्दाः

१. **मातुलः** = मामा	११. **पूगीफलम्** = सुपारी
२. **मातुलानी** = मामी	१२. **लवङ्गम्** = लौंग
३. **पितृव्यः** = चाचा	१३. **रङ्गः** = कत्था
४. **पितामहः** = दादा	१४. **सुधा** = चूना, अमृत
५. **मातामहः** = नाना	१५. **एला** = इलायची
६. **पितामही** = दादी	१६. **नागवल्लीपत्रं** = पान
७. **मातामही** = नानी	१७. **ताम्बूलम्** = पान, बीडा
८. **कुदरम्** = अलमारी	१८. **मञ्जूषा** = पेटी, सन्दूक
९. **मञ्चः** = मचान, मंच	१९. **तालकम्** = ताला
१०. **पर्यङ्कः** = पलंग	२०. **घटः** = घडा

★

पाठ ६

निम्नांकित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए :–

१. मामी सुन्दर वस्त्र और आभूषण धारण करती है। २. मैं भी आभूषण धारण करूँगा। ३. क्या तू आभूषण धारण नहीं करेगी? ४. तुम पुष्पमाला धारण करोगे? ५. नहीं, हम तो केवल स्वर्ण के अलंकार धारण करेंगे। ६. वह राम के मन्दिर में अयोध्या की कथा कहता है। ७. शिक्षक विद्यालय में कथाएँ कहेंगे। ८. यदि शिक्षक न कहेंगे तो मैं कहूँगा। ९. क्या तुझे ईश्वर की कथा में आनंद नहीं आता? १०. मुझे कथा में तो बहुत आनन्द आता है। ११. क्या तुम तालाब में कपडे धोओगे? १२. वह वहाँ कपडे नहीं धोयेगा। १३. मैं प्रतिदिन वस्त्र धोता हूँ। १४. रमेश प्रतिदिन वस्त्र नहीं धोता। १५. वह मस्तक को कैसे पानी से धोता है? १६. राजा प्रजा का पालन करता है। १७. दादी घर को पालती है। १८. पिता पुत्र का पालन करता है। १९. मैं उसका पालन नहीं करूँगा। २०. क्या तुम खेती के लिए बैल का पालन करोगे?

आज्ञार्थक क्रियापदानि

१. गच्छ=जा। २. आगच्छ=आ। ३. पिब=पी। ४. पठ=पढ़। ५. पश्य=देख। ६. क्रीड=खेल। ७. वद=बोल।

८. धाव = दौड । ९. पत = गिर । १०. लिख = लिख । ११. तिष्ठ = बैठ । १२. भक्षय = खा । १३. कुरु = कर । १४. भव = हो । १५. अट = घूम । १६. धारय = धारण कर । १७. कथय = कह । १८. क्षालय = धो । १९. पालय = पालन कर, पाल । २०. तोलय = तोल ।

निम्नांकित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

१. चणकान् तोलय । २. लवणं तोलय । ३. वस्त्राणि क्षालय । ४. यदि त्वं रुग्ण: तर्हि प्रात:काले उद्याने अट । ५. अहं कथयामि त्वं वस्त्राणि धारय । ६. हे बालक ! त्वं ओदनं भक्षय, लशुनं भक्षय । ७. देव, वार्तां कथय । ८. हे सारथे ! त्वं सबलान् अश्वान् पालय । ९. त्वं तत्र तिष्ठ । १०. तत् कार्यं त्वं अति शीघ्रं कुरु । ११. सायंकाले अध्ययनं कुरु । १२. कथय त्वं क्व गमिष्यसि ? १३. प्रात:काले त्वं प्रतिदिनं कवोष्णं गोदुग्धं पिब । १४. भोजनसमये कवोष्णं जलं मा पिब । १५. समाचारपत्रे एकां वार्तां लिख । १६. तस्मिन्क्रीडाङ्गणे त्वं सत्वरं धाव । १७. अत्र सन्ध्यावन्दनार्थं शीघ्रं आगच्छ । १८. गीतां पठ । १९. पाठशालायां सार्धदशवादनसमये गच्छ । २०. मध्याह्ने प्रखरं सूर्यं आकाशे पश्य । २१. गीताया: श्लोकान् वद । २२. जनकं प्रति पत्रं लिख । २३. मन्दिरे कथां कथय । २४. तत्र पश्य ।

रिक्त स्थानों में योग्य शब्दों की पूर्ति कीजिए:—

१..............पालयामि । २...............पालयिष्यति । ३................क्षालयिष्यामि । ४...............क्षालयिष्यथ । ५................कथयसि । ६...............कथयिष्यन्ति । ७..................धारयामः । ८...............धारयति । ९...............तोलयिष्यामि । १०................तोलयिष्यति ।

निम्नांकित शब्दों का प्रयोग करके वाक्य बनाइए :—

१. कथिकायाम् ।	६. पूरिकाभ्यः ।
२. यूकाः ।	७. भार्यया ।
३. सारिकाणाम् ।	८. कुण्डलिकाभिः ।
४. मक्षिका ।	९. बालाः ।
५. मालासु ।	१०. वार्तायाः ।

स्वर सन्धि (यण्)

नियम १ :—ह्रस्व अथवा दीर्घ इ, उ, ऋ स्वरों के आगे विजातीय स्वरों के आने पर उनका क्रमशः य् व् र् हो जाता है। इस नियमानुसार सन्धि का स्वरूप यह होगा :—

इ + अ = य	इ + आ = या
उ + अ = व	उ + आ = वा
ऋ + अ = र	ऋ + आ = रा

उदाहरण :-यदि+अपि=यद्यपि। इति+अत्र=इत्यत्र। यदि+

अहं=यद्यहम्। अनु+अय:=अन्वय:। भानु+अस्त:=भान्वस्त:। भवतु+अत्र=भवत्वत्र। पितृ+अनुमति:=पित्रनुमति:।

अति+आचार:=अत्याचार:। सु+आगतम्=स्वागतम्। पितृ+आदेश:=पित्रादेश:।

किसी भी सन्धि के विषय में कुछ साधारण नियम :—

(१) उपसर्ग एवं धातु की तथा समास में आनेवाले अक्षरों की सन्धि अनिवार्य है। यदि ऐसा न किया जाये तो उसे अशुद्ध माना जाता है। उदाहरणार्थ :–'स्वागतम्' के स्थान पर सु+आगत तथा 'महेश' के स्थान पर महा+ईश यदि बोला या लिखा जाय तो वह अशुद्ध माना जायेगा।

वाक्य के लिए यह नियम लागू नहीं होता। वाक्य में सन्धि तो होती है, किन्तु यदि कहीं न भी हुई तो उसे अशुद्ध नहीं माना जाता।

(२) संस्कृत भाषा में हल् (आधा व्यंजन :–जैसे क्, ख्, ग्) बाद में आनेवाले स्वर अथवा व्यंजन में मिल जाते हैं। जैसे :–इदम्+एव=इदमेव। तत्+कुलम्=तत्कुलम्। इनमें से व्यञ्जन् को तो पृथक् भी लिख सकते हैं, किन्तु स्वर को तो मिला ही देना चाहिए।

नियम २ :–यदि ए, ऐ, ओ तथा औ स्वरों के आगे अन्य स्वर आए तो उनके स्थान पर क्रमशः अय्, आय्,

अव्, आव् हो जाते हैं। जैसे :—

ए + अ = अय

ऐ + अ = आय

ओ + अ = अव

औ + अ = आव

उदाहरण :–शे+अयनम्=शयनम्। नै + अकः = नायकः। विष्णो + ए = विष्णवे। पौ + अकः = पावकः।

नियम ३ :–पदान्त के अन्तिम ए अथवा ओ के वाद अकार आने से उस अकार का लोप हो जाता है, अर्थात् वह अकार पूर्वाक्षर में मिल जाता है।

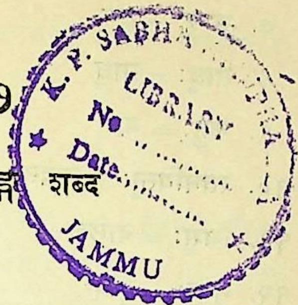
जहाँ-जहाँ अकार इस प्रकार मिल जाता है वहाँ 'ऽ' यह चिह्न लिखते हैं। जैसे :—

जले + अन्तर्हितः = जलेऽन्तर्हितः।

रामो + अब्रवीत् = रामोऽब्रवीत्।



पाठ ७



उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

गुरुः = गुरु

एकवचन	बहुवचन	
गुरुः	गुरवः	प्रथमा
गुरुम्	गुरून्	द्वितीया
गुरुणा	गुरुभिः	तृतीया
गुरवे	गुरुभ्यः	चतुर्थी
गुरोः	गुरुभ्यः	पञ्चमी
गुरोः	गुरूणाम्	षष्ठी
गुरौ	गुरुषु	सप्तमी
गुरो	गुरवः	सम्बोधनम्

इसी प्रकार अन्य उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप भी चलेंगे ।

शब्दाः

१. **इषुः** = वाण
२. **तन्तुः** = धागा
३. **बाहुः** = बाँह
४. **पशुः** = पशु
५. **जन्तुः** = प्राणी
६. **मनुः** = मनु (नाम)

७. **भानुः** = सूर्य	१४. **सेतुः** = पुल
८. **साधुः** = साधु	१५. **इक्षुः** = ईख
९. **क्रतुः** = यज्ञ	१६. **वायुः** = वायु
१०. **स्तनयित्नुः** = बादल	१७. **मेरुः** = मेरुपर्वत
११. **शिशुः** = बालक	१८. **ऋतुः** = ऋतु
१२. **मृत्युः** = मृत्यु	१९. **भिक्षुः** = भिक्षु
१३. **प्रभुः** = स्वामी	२०. **गुरुः** = शिक्षक

निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

१. ग्रीष्मे ऋतौ अहं पर्वतप्रदेशं गमिष्यामि । २. एषः वसन्तः ऋतुः अस्ति । ३. शिशूनां कृते तस्मिन् बालमंदिरे क्रीडाङ्गणं नास्ति । ४. तेन शिशुना पुस्तकं तत्रैव स्थापितम् । ५. साधवे फलानि पुष्पाणि च देहि । ६. साधूनां समागमः लाभाय भवति । ७. साधवः नगरात् नगरं अटन्ति । ८. प्रभोः रामचन्द्रस्य स्तवनं भक्ताः कुर्वन्ति । ९. प्रभुः रामचन्द्रः भक्ताय धनं ददाति । १०. नदीपारं गन्तुं सेतोः आवश्यकता भवति । ११. विना सेतुना मनुष्याः नदीपारं गन्तुमसमर्थाः भवन्ति । १२. प्रभाते मन्दं मन्दं वायुः वाति । १३. वायुना एव सर्वे जन्तवः जीवन्ति । १४. वायौ महती शक्तिः वर्तते । १५. मेरुः नामकः कश्चित् पर्वतः उत्तरप्रदेशे अस्ति । १६. मेरौ देवानां निवासः आसीत् । १७. सः रुग्णः इक्षोः रसं पिबति । १८. इक्षोः रसः अति मधुरः भवति ।

१९. इक्षूणां छायासु कृषकाः कथं विश्राम्यन्ति ? २०. गुरुणामाज्ञा परिपालनीया ।

संस्कृत भाषा में अनुवाद कीजिए :–

१. यह वर्तन सोने का वना हुआ है । २. इसमें सुगन्धित जल है । ३. उस जल में कमल और मोगरे के फूल हैं । ४. फलों का रंग चित्र-विचित्र है । ५. उनका आकार भी वहुत मनोहर है । ६. वहाँ पत्ते भी हैं । ७. पत्तों का रंग हरा है । ८. महल में यह वर्तन रखा है । ९. इस महल में एक राजा रहता है । १०. उसके चार पुत्र हैं । ११. सभी पुत्र पाठशाला में पढते हैं । १२. वे शाम को घूमने जाते हैं । १३. इस वडे महल में घोड़े और हाथी भी हैं । १४. क्या तुमने राजा को देखा है ? १५. नहीं, मैं आज शाम को उसे देखूँगा । १६. जब राजा घूमने जायगा, तब मैं उसे देखूँगा । १७. उसके पास सेवक हैं । १८. सेवक राजा की रक्षा करते हैं । १९. राजा के बगीचे में कोई नहीं जाता । २०. वह राजा बड़ा शक्तिशाली है ।

नीत्युपदेशः

१. सत्यं वद = सच बोल । २. धर्मं चर = धर्म का आचरण कर । ३. मित्रं प्रीणीहि = मित्र को सन्तुष्ट कर । ४. क्रोधं जय = क्रोध को जीत । ५. दयां धारय = दया को धारण कर । ६. देवान् पूजय = देवों की पूजा कर । ७. हिंसा मा कृथाः = हिंसा मत कर । ८. स्वाध्यायान्मा प्रमदः = स्वाध्याय से प्रमाद मत कर । ९. धीरो धैर्यं न मुञ्चति = धीर मनुष्य

धैर्य नहीं छोड़ता। १० अहंकारी विनश्यति = अहंकार करनेवाला नष्ट होता है।

संख्यावाची पुल्लिङ्ग शब्द

एक = एक

द्वि = दो

त्रि = तीन

चतुर् = चार

पंच = पाँच

षट् = छः

सप्त = सात

अष्ट = आठ

नव = नौ

दश = दस

क्रमवाचक शब्द

प्रथमः = पहला

द्वितीयः = दूसरा

तृतीयः = तीसरा

चतुर्थः, तुर्यः, तुरीयः = चौथा

पंचमः = पाँचवाँ

षष्ठः = छठा

सप्तमः = सातवाँ

अष्टमः = आठवाँ

नवमः = नवाँ

दशमः = दसवाँ



पाठ ८

उकारान्त स्त्रीलिंग धेनु शब्द

धेनु = गाय

एकवचन	बहुवचन	
धेनुः	धेनवः	प्रथमा
धेनुम्	धेनूः	द्वितीया
धेन्वा	धेनुभिः	तृतीया
धेन्वै, धेनवे	धेनुभ्यः	चतुर्थी
धेन्वाः, धेनोः	धेनुभ्यः	पंचमी
धेन्वाः, धेनोः	धेनूनाम्	षष्ठी
धेन्वाम्, धेनौ	धेनुषु	सप्तमी
धेनौ	धेनवः	सम्बोधनम्

इसी प्रकार रज्जु, हनु आदि शब्दों के रूप चलेंगे।

निम्नांकित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

१. भारत में लोग गाय को पूजते हैं। २. गाय चारा खाती है। ३. चारा जंलग में होता है। ४. किसान गायें पालता है। ५. गाय का दूध पुष्टिकारक होता है। ६. गाय के दूध में मिठास रहती है। ७. बालकों को गाय का दूध देना

चाहिए। ८. गाय में देवता निवास करते हैं। ९. गाय का गोठा खेत में है। १०. गाय के लिए जल लाओ। ११. जो गाय की सेवा करेंगे, उन्हें आनन्द होगा। १२. गाय का बछडा दौड़ता है। १३. गाय का मूत्र रोगों को नष्ट करता है। १४. गाय वड़ी हितकारिणी है। १५. हम गाय को प्रणाम करते हैं।

निम्नांकित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

१. वसिष्ठस्य समीपे वह्व्यः धेनवः आसन्। २. तासु एका नन्दिनी नाम्नी धेनुः आसीत्। ३. मम गृहे एका धेनुः अस्ति। ४. सा प्रतिदिनं सेटकमेकं दुग्धं ददाति। ५. दर्शनीया खलु सा धेनुः। ६. धेनुपालनेन पुण्यं भवति। ७. धेनोः चत्वारः पादाः भवन्ति। ८. धेनूनां रक्षणं नूनं राष्ट्रहितायैव। ९. धेनोः वत्साः जायन्ते। १०. वत्साः यदा वृषभाः भवन्ति तदा कृषौ तेषामुपयोगः भवति।



न लाभाय मूर्खाः अनुचराः

कस्यचित् नृपतेः समीपे एकः वानरः आसीत्। सः तस्य नरपतेः अतीव विश्वासपात्रमभवत्। एकदा राजा स्वप्रासादस्य शयनकक्षे स्वपितुमगच्छत्। अतिविशालः आसीत् सः कक्षः। तत्र सुवर्णनिर्मितः एक पर्यङ्कः आसीत्। रजतनिर्मिताः चतस्रः

आसन्दिकाः आसन् । विविधानि नयनमनोहराणि चित्राणि आसन् । अन्ये नानाविधानि सुखोपकरणानि अपि तत्र आसन् । स्वर्णमये तस्मिन् पर्यङ्के सुश्वेतं प्रावरणं मृदुतरं चोपधानमासीत् । तस्मिन् समये उष्णता आधिक्येनाभवत् । उष्णतानिवारणार्थं शीतव्यजनस्य आवश्यकतासीत् । अतः स वीजयितुं व्यजनमेकं आनीतवान् । इत्थं राजा निद्राधीनो वभूव । अत्रान्तरे तेन वानरेण तस्य नृपस्य वक्षःस्थलस्योपरि एका मक्षिका उपविष्टा दृष्टा । व्यजनेन वारितापि सा पुनः पुनः तत्रैव समुपाविशत् । एतत् दृष्ट्वा सः वानरः क्रुद्धो वभूव । तत्र समीपे एकः खड्गः आसीत् । तं खड्गमादाय तेन क्रुद्धेन वानरेण तस्याः मक्षिकायाः उपरि प्रहारः कृतः । मक्षिका तावत् सत्वरं उड्डीय दूरं गता । परमनेन प्रहारेण सः राजा पञ्चत्वं गतः । अत उच्यते मूर्खाः अनुचराः न कदापि लाभाय भवन्ति ।

शब्दाः

कस्यचित् = किसी । **आसीत्** = था **आसन्दिका**= कुर्सी चौकी (कौच) । **पर्यङ्कः** = पलंग । **उपकरणम्** = साधन । **प्रावरणम्** = चादर । **उपधानम्** = तकिया । **व्यजनम्** = पंखा । **वीजयितुम्** = पंखा झलने के लिए । **बभूव** = हुआ । **खड्गः** = तलवार । **उड्डीय**= उड़कर । **पञ्चत्वम्** = मृत्यु । **अनुचरः**–नौकर ।



पाठ ९

शब्दाः

१. **बुभुक्षा** = भूख
२. **पिपासा** = प्यासा
३. **सिकता** = रेत
४. **ग्रीवा** = गर्दन
५. **तुला** = तराजू
६. **रसना** = जीभ
७. **रथ्या** = गली
८. **प्रमदा** = स्त्री
९. **जरा** = बुढापा
१०. **निशा** = रात
११. **पटुः** = चतुर
१२. **तनुः** = शरीर
१३. **बटुः** = ब्रह्मचारी
१४. **विधुः** = चन्द्रमा
१५. **सुनूः** = लडका
१६. **पांसुः** = धूल
१७. **तरुः** = वृक्ष
१८. **इन्दुः** = चन्द्र
१९. **असिः** = तलवार
२०. **अलिः** = भौंरा

निम्नांकित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

१. भूपस्य सेवकाः पटवः सन्ति । २. किं त्वां बुभुक्षा वाधते ? ३. तनुं भूषयति सः वस्त्रालङ्कारैः । ४. ग्रीष्मकाले पिपासा सर्वान् पीडयति । ५. वटवः गुरुकुले शास्त्राणि पठन्ति । ६. समुद्रस्य सिकताः शुभ्रतराः दृश्यन्ते । ७. विधोः ज्योत्स्ना भूतले प्रसरति । ८. सवला तस्य ग्रीवा । ९. तुलामादाय वस्तूनां क्रयं विक्रयं च आपणिकः करोति । १०. जनकः सूनवे पत्रं

लिखति। ११. दन्तेषु रसना तिष्ठति। १२. पांसुभिः तस्य वालकस्य शरीरं व्याप्तं वर्तते। १३. तस्मिन् खेटके लघवः रथ्याः सन्ति। १४. मरुप्रदेशे तरवः न भवन्ति। १५. सा प्रमदा त्वरया कुत्र गच्छति? १६. निशायामिन्दुं पश्यामि। १७. जरया जर्जरितः पुरुषः न तत्र गन्तुं समर्थः। १८. वीरपुरुषः असिना रक्षां करोति। १९. निशायाम् अन्धकारः भवति। २०. पुष्पेषु अलिः भ्रमति।

क्रियापदानि

प्रथ् = (प्रथयति, प्रथयते) प्रसिद्ध होना।

प्री = (प्रीणयति, प्रीणयते) संतुष्ट होना, प्रसन्न होना।

बन्ध् = (वन्धयति, बंधयते) बाँधना।

भूष् = (भूषयति, भूषयते) भूषित करना, सजाना।

मृज्-मार्ज् = (मार्जयति, मार्जयते) साफ करना।

युज् = (योजयति, योजयते) योजना करना।

रच् = (रचयति, रचयते) रचना करना, वनाना।

स्निह् = (स्नेहयति, स्नेहयते) स्नेह करना, प्यार करना।

हिंस् = (हिंसयति, हिंसयते) हिंसा करना, जान से मारना।

निम्नांकित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए:—

१. वह प्रसिद्ध होता है। २. क्या तू सन्तुष्ट होता है? ३. वह शत्रु को रस्सी से बाँधता है। ४. मनुष्य अपनी देह को

अलंकारों से सजाता है। ५. वह बर्तन माँजता (साफ करता) है। ६. राजा प्रजा को सन्तुष्ट करता है। ७. क्या तू घर की रचना करता है? ८. पिता पुत्र से स्नेह करता है। ९. वह पशुओं की हिंसा करता है। १०. मैं हिंसा नहीं करता।

*

सम्भाषणम्

किमिदं ते हस्ते ?

पुस्तकमिदं संस्कृतभाषायाः।

किं नामधेयं पुस्तकस्यास्य ?

अभिज्ञानशाकुन्तलमिदम्।

अपि कविकुलगुरोः कालिदासस्य कृतिरियम् ?

वाढम्, न जानासि किं यत् अस्ति कालिदासस्य सुप्रसिद्धमिदं नाटकम्।

को न जानति ? किं किमधीतं त्वयास्मिन् नाटके ?

पुष्कलमधीतं मयास्मिन् नाटके।

दुष्यन्तस्य चरितम्, शकुन्तलायाः चरितम्, ऋषीणाम् उपदेशः, आश्रमस्य रमणीयता, मृगाणां चापल्यं, सखीनां वार्तालापः, वालकस्य भरतस्य वीरता इत्यादिकं सर्वमधीतम्।

अस्मिन् नाटके प्राधान्येन करुणरसः अस्ति, शृङ्गाररसः अस्ति अथवा शान्तरसः अस्ति ?

अहं तु मन्ये यदस्मिन् शृङ्गाररसस्यैव प्राधान्यमस्ति। पश्यास्य नाटकस्य चतुर्थोऽङ्कः वैशिष्ट्येन प्रसिद्धः। उक्तं हि—

काव्येषु नाटकं रम्यं, तत्रापि च शकुन्तला।
तत्रापि हि चतुर्थोऽङ्कः तत्र श्लोकचतुष्टयम्॥

अस्मिन् श्लोकचतुष्टये शृङ्गाररसस्योद्रेकः अस्ति। शकुन्तलायाः जीवनस्य अधिकांशः वियोगेनापमानेन च परिपूर्णः अस्ति। ऋषयः शकुन्तलायाः वियोगेन खिन्नाः सन्ति, दुष्यन्तः अपि तथैव खिन्नः। अतः सर्वत्रापि प्रायशः विप्रलम्भशृङ्गाररसस्यैव प्रवाहः दृश्यते।

किं मह्यमपि तत् दास्यसि पठितुम्?

गृहाण, परं यथाशीघ्रं प्रत्यावर्तय।

यथेच्छसि तथैव भविष्यति।



पाठ १०

सुभाषितानि

१

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् ।
आत्मैव ह्यात्मनो वन्धुः आत्मैव रिपुरात्मनः ।।

२

असंशयं महावाहो, मनो दुर्निग्रहं चलम् ।
अभ्यासेन तु कौन्तेय, वैराग्येण च गृह्यते ।।

३

श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्धयानं विशिष्यते ।
ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम् ।।

४

यो न हृष्यति न द्वेष्टि, न शोचति न काङ्क्षति ।
शुभाशुभपरित्यागी, भक्तिमान् यः स मे प्रियः ।।

५

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य, वर्तते कामकारतः ।
न स सिद्धिमवाप्नोति, न सुखं न परां गतिम् ।।

६

दातव्यमिति यद्दानं, दीयतेऽनुपकारिणे ।
देशे काले च पात्रे च, तद्दानं सात्विकं स्मृतम् ।।

७

यत्तु प्रत्युपकारार्थम्, फलमुद्दिश्य वा पुनः।
दीयते च परिक्लिष्टं, तद्दानं राजसं स्मृतम् ।।

८

त्याज्यं दोषवदित्येके, कर्म प्राहुर्मनीषिणः।
यज्ञदानतपः कर्म, न त्याज्यमिति चापरे ।।

९

यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत्।
यज्ञो दानं तपश्चैव, पावनानि मनीषिणाम् ।।

१०

न हि देहभृता शक्यं, त्यक्तुं कर्माण्यशेषतः।
यस्तु कर्मफलत्यागी, स त्यागीत्यभिधीयते ।

११

स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः, संसिद्धिं लभते नरः।
स्वकर्मनिरतः सिद्धिं, यथा विन्दति तच्छृणु ।।

१२

सर्वधर्मान्परित्यज्य, मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो, मोक्षयिष्यामि मा शुचः ।।

१३

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे, न त्वं शोचितुमर्हसि ।।

१४

विहाय कामान् यः सर्वान्, पुमाँश्चरति निःस्पृहः।
निर्ममो निरहङ्कारः, स शान्तिमधिगच्छति ।।

१५

नियतं कुरु कर्म त्वं, कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः।
शरीरयात्रापि च ते, न प्रसिद्ध्येदकर्मणः।



संस्कृत लोकोक्तियाँ

१. न क्वापि सरलेन पदं निधीयते।

अर्थ—सीधी अँगुली से घी नहीं निकलता।

प्रयोग:—क्वचित्कार्यसाधने कुटिलतायाः अत्यावश्यकता भवति, यतो न क्वापि सरलेन पदं निधीयते।

२. न निश्चितार्थाद्विरमन्ति धीराः।

अर्थ—धीर मनुष्य अपने निश्चय से विचलित नहीं होते।

प्रयोग:—'प्रारब्धमुत्तमजनाः न परित्यजन्ति' तद्वदव 'न निश्चितार्थाद्विरमन्ति धीराः।'

३. नास्ति गतिश्रमो यानवताम् ।

अर्थ—जिसके घर वाहन होता है, उसे चलने का श्रम नहीं होता ।

प्रयोग:—यषां जनानां समीपे धनं भवति ते तस्य यथाकाङ्क्षितं व्ययं विदधति, यथा नास्ति गतिश्रमो यानवताम् ।

४. नास्त्यर्थिनो गौरवम् ।

अर्थ—याचकों को कभी वडप्पन नहीं मिलता ।

प्रयोग:—याचनं महाहानिकरम्, अतएवोच्यते-नास्त्यर्थिनो गौरवम्'।

५. निम्बफलानि काकैर्भुज्यन्ते ।

अर्थ—नीम के कड़ुए फल कौवे ही खाया करते हैं ।

प्रयोग:—मलिनचरित्रशालिनः असुन्दराणि कटुफलानि भक्षयन्ति अत एवोच्यते—निम्बफलानि काकैर्भुज्यन्ते ।

६. न समुद्रतलमस्पृष्ट्वा नरो विन्दति मौक्तिकम् ।

अर्थ—समुद्रतल को स्पर्श किये विना कोई मनुष्य मोती नहीं पा सकता ।

प्रयोग:—महद्वस्तुनः कृते महतो यत्नस्यावश्यकताऽस्ति, यतः 'न समुद्रतलमस्पृष्ट्वा नरो विंदति मौक्तिकम् ।'

७. न चागतं सुखं त्यजेत् ।

अर्थ—आये हुए सुख का त्याग न करो ।

प्रयोगः—अस्य संसारस्य सुखदुःखात्मकं फलद्वयमस्ति। यथाऽनिवार्यरूपेण दुःखप्राप्तिर्जायते तथैव च सुखम् अतएव 'न चागतं सुखं त्यजेत् ।'

८. न दुर्जनो जातु जहाति दुर्गुणम् ।

अर्थ—दुर्जन कभी दुर्गुण नहीं छोडता ।

प्रयोगः—प्रकृतिर्दुस्त्यजा, यतः 'न दुर्जनो जातु जहाति दुर्गुणम् ।'

९. गुणैर्विहीनाः बहु जल्पन्ति ।

अर्थ—गुणरहित लोग बहुत बकते रहते हैं ।

प्रयोगः—भोः ! भोः ! विरम व्यर्थप्रलापात्, अन्यथा न ते कश्चिदपि श्रोष्यति, यतः गुणैर्विहिनाः बहु जल्पन्ति ।'

१०. गतानुगतिको लोकः ।

अर्थ—जनता एक-दूसरे का अनुसरण करती है अथवा संसार लकीर का फ़कीर है ।

प्रयोगः—महाजनाः येन मार्गेण गच्छन्ति, अन्येऽपि तेनैव यतो हि–'गतानुगतिको लोकः ।'

११. गतस्य शोचनं नास्ति ।

अर्थ—'अब पछताये होत का, जब चिडिया चुग गयी खेत ।'

प्रयोगः—यदा युद्धे धनं, बलं परिजनाश्च नष्टाः तदा, राजपंडितः नृपं प्रति बोधयामास–'गतस्य शोचनं नास्ति ।'

१२. गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणः।

अर्थ–हीरे की परख जौहरी ही जाने।

प्रयोगः–मूर्खाः विदुषो मूल्यं न जानन्ति, यतः 'गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणः।'

१३. गतः कालो न पुनरुपैति।

अर्थ–'गया वक्त फिर हाथ आता नहीं।'

प्रयोगः–त्वरया कर्म विधीयताम्, यतः 'गतः कालो न पुनरुपैति।'

१४. गतं दुःखं सुखं च तत्।

अर्थ–सुख-दुःख तो आते-जाते ही रहते हैं।

प्रयोगः–गतभूमिधनः कश्चित् भूमिधरः (जमींदार) शोचति, यत् 'गतं दुःखं सुखञ्च तत्।'

१५. गर्वात् शीलं महत्।

अर्थ–घमण्ड से नम्रता बडी है।

प्रयोगः–दर्पदलनमेव महतां प्रशस्तम्, यतः 'गर्वात् शीलं महत्।'

१६. घटे रिक्ते ध्वनिर्महान्।

अर्थ–'थोथा चना बाजे घना।'

प्रयोगः–मूढाः आत्मस्तवं अधिकं कुर्वन्ति, न भवन्ति गुणगम्भीराः यतः 'घटे रिक्ते ध्वनिर्महान्।'

१७. चकास्ति योग्येन हि योग्यसंगमः ।

अर्थ–योग्य के साथ योग्य सम्बन्ध ही भला लगता है ।

प्रयोगः–पुरुषोत्तमं प्रधानमन्त्रिणं दृष्ट्वा युगपदव जना ऊचुः 'चकास्ति योग्येन हि योग्यसंगमः ।'

१८. चक्रवत् परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च ।

अर्थ—'चार दिनों की चाँदनी फिर अंधेरी रात ।'

प्रयोगः—दारिद्र्ये निराशो न भवेन्नरः चिन्तयेच्च 'चक्रवत् परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च ।'

१९. चिरादपि वरं शिक्षा ।

अर्थ–बुढापे में भी पढना अच्छा है ।

प्रयोगः–मूर्ख प्रौढोऽपि विद्यामभ्यसेत्, यतः 'चिरादपि वरं शिक्षा ।'

२०. चक्रं क्रन्दत्यतैलकम् ।

अर्थ–सूखा पहिया चरचराया करता है ।

प्रयोगः–अस्नेहं सर्वमेव शुष्यति, यतः 'चक्रं क्रन्दत्यतैलकम् ।'



परिशिष्ट

कवि शब्द के सम्पूर्ण रूप

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	
कविः	कवी	कवयः	प्रथमा
कविम्	कवी	कवीन्	द्वितीया
कविना	कविभ्याम्	कविभिः	तृतीया
कवये	कविभ्याम्	कविभ्यः	चतुर्थी
कवेः	कविभ्याम्	कविभ्यः	पंचमी
कवेः	कव्योः	कवीनाम्	षष्ठी
कवौ	कव्योः	कविषु	सप्तमी
कवे	कवी	कवयः	सम्बोधनम्

तत् (स्त्रीलिंग) = वह

सा	ते	ताः	प्रथमा
ताम्	ते	ताः	द्वितीया
तया	ताभ्याम्	ताभिः	तृतीया
तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः	चतुर्थी
तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः	पंचमी
तस्याः	तयोः	तासाम्	षष्ठी
तस्याम्	तयोः	तासु	सप्तमी

मति (स्त्रीलिंग) = बुद्धि

मतिः	मती	मतयः	प्रथमा
मतिम्	मती	मतीः	द्वितीया
मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः	तृतीया

मत्यै, मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः	चतुर्थी
मत्याः, मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः	पंचमी
मत्याः, मतेः	मत्योः	मतीनाम्	षष्ठी
मत्याम्, मतौ	मत्योः	मतिषु	सप्तमी
मते	मती	मतयः	सम्बोधनम्

गुरु (पुल्लिग) = गुरु

गुरुः	गुरू	गुरवः	प्रथमा
गुरुम्	गुरू	गुरून्	द्वितीया
गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः	तृतीया
गुरवे	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः	चतुर्थी
गुरोः	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः	पंचमी
गुरोः	गुर्वोः	गुरुणाम्	षष्ठी
गुरौ	गुर्वोः	गुरुषु	सप्तमी
गुरो	गुरू	गुरवः	सम्बोधनम्

धेनु (स्त्रीलिंग) = गाय

धेनुः	धेनू	धेनवः	प्रथमा
धेनुम्	धेनू	धेनूः	द्वितीया
धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः	तृतीया
धेन्वै, धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः	चतुर्थी
धेन्वाः, धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः	पंचमी
धेन्वाः, धेनोः	धेन्वोः	धेनुनाम्	षष्ठी
धेन्वाम्, धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु	सप्तमी
धेनो	धेनू	धेनवः	सम्बोधनम्



प्रकाशक

सु. रामकृष्णन्

भारतीय विद्या भवन,

कुलपति क. मा. मुन्शी मार्ग, बम्बई ७

प्रथम	संस्करण	२,०००	सन्	१९५६
द्वितीय	संस्करण	२,०००	सन्	१९५७
तृतीय	संस्करण	५,०००	सन्	१९५८
चतुर्थ	संस्करण	१०,०००	सन्	१९५९
पंचम	संस्करण	५,०००	सन्	१९५९
षष्ठ	संस्करण	१०,०००	सन्	१९६२
सप्तम	संस्करण	५,०००	सन्	१९६४
अष्टम	संस्करण	१०,०००	सन्	१९६६
नवम	संस्करण	१५,०००	सन्	१९६९
दशम	संस्करण	२०,०००	सन्	१९७२

मुद्रक

पी. एच. रामन

एसोसिएटेड एडवर्टाइजर्स एण्ड प्रिण्टर्स

५०५, तारदेव आर्थर रोड, बम्बई ३४